राजा तू कैसा ?

राजा तेरी
रानी है रोती
देख के मेरी
नाक में मोती
मोती है मेरा
जगमग–जगमग
रानी है तेरी
गड़बड़–गड़बड़

राजा तू
कैसा भिखमंगा
छीन लिया
मेरा मोती चंगा

रणवीर गुर्जर, उम्र–13 वर्ष,
समूह–बादल

मोरंगे

सितम्बर 10

मान सिंह

इस बार

कविताएँ

राजा तू कैसा ?
गाँव की महिला
ढोलक वाला
आलू की तेज़ तरकारी
चाऊँ भाऊँ खाऊँ
काला बादल
ई बरसात में

कहानियाँ

ऊँट का फूल
मम्मी–पापा की याद
पत्ता और ढेला

आलेख

कहानी क्यों लिखते हैं ?
एक लापता पक्षी की याद
कुत्ते से बातचीत
तथा याद की धूप छाँव में,
खिड़की व अन्य स्तम्भ

वर्ष 2 अंक 15

सम्पादन : प्रभात
सहयोग : भारती, मीनू मिश्रा, रंजीता, विष्णु गोपाल
डिज़ाइन : शिव कुमार गाँधी
आवरण पर माँडना मदन मीणा के सौजन्य से
प्रूफ़ : नताशा
वितरण : लोकेश राठौर

प्रबंधन
मनीष पांडेय
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
3 / 155, हाउसिंग बोर्ड,
सवाईमाधोपुर, राजस्थान

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउंडेशन' आस्ट्रेलिया के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

दीपक मीणा, सागर

खिड़की

जंगल में बारिश

मैं जब छोटा था, एक बार माँ ने कुकुरमुत्ते बटोरने के वास्ते मुझे जंगल में भेजा। मैंने जंगल में खूब सारे कुकुरमुत्ते बटोरे और घर लौटने को हुआ। एकाएक अंधेरा छा गया, बादल गरजने लगे और वर्षा होने लगी। मैं डर गया और एक बड़े से बलूत के पेड़ के नीचे बैठ गया। तभी इतने ज़ोर से बिजली चमकी कि आँखें दुखने लगी और मैंने उन्हें मींच लिया। मेरे सिर के ऊपर कुछ तड़कने और कड़कने की आवाज़ हुई और फिर कोई चीज़ आकर ज़ोर से मेरे सिर से टकरायी। मैं ज़मीन पर गिर पड़ा और तब तक वहाँ पड़ा रहा, जब तक वर्षा बंद न हो गयी। जब मुझे होश आया, सारे जंगल में पेड़ों से पानी टपक रहा था, चिड़ियाँ गा रही थी और धूप निकल आयी थी। बड़ा बलूत टूट गया था और उसके ठूँठ से धुँआ उठ रहा था। मेरे चारों ओर बलूत की खपच्चियाँ बिखरी पड़ी थी। मेरी सारी कमीज़ गीली हो गई और शरीर से चिपकी हुई थी। सिर पर गुमटा निकल आया था और थोड़ा सा दर्द हो रहा था। मैंने अपनी टोपी और कुकुरमुत्तों की टोकरी उठायी और भागा–भागा घर पहुँचा। घर में कोई नहीं था। मैंने मेज़ से रोटी का टुकड़ा उठाकर खाया और अँगीठी के ऊपर जाकर सो गया। जब जागा, तो देखा कि मेरे लाये हुए कुकुरमुत्ते पका लिये गये हैं, मेज़ पर रखे हुए हैं और सब खाने बैठ गये हैं। मैं चिल्लाया, ''मेरे बिना क्यों खा रहे हो?'' उन्होंने जवाब दिया, ''तो सो क्यों रहे हो, आओ, तुम भी खाओ।''

लियो टॉल्सटाय

ब्रजेश गुर्जर, फूल, 13

गाँव की एक महिला

गाँव की एक महिला
काम करती है खेत में दिनभर
बिना हवा के
काम करती है एक महिला
कड़ाके की धूप में

कुदाल ज़मीन पर रखकर
झाड़ की छाया में रखी मटकी से
पीती है दो घूँट पानी

और फिर वही कुदाल पकड़कर
परिश्रम शुरू करती है

दूर से धूप में चलकर आते
परदेसियों को देखती है
बैठ जाती है कुछ देर के लिए
कुदाल रखकर खेत में
सोचती है मन ही मन

कहाँ से आए होंगे ये लोग
और कहाँ जा रहे होंगे
दोपहर की कड़ी धूप में
जल जाएँगे इनके कोमल चेहरे
ज्येष्ठ की इस धूप में

सोचती वह परेदसियों के बारे में
झट से ध्यान हटाती है
फिर वह कुदाल पकड़कर
शुरू कर देती है खेत खोदना

वह कठिन मेहनत करती है
अटल विश्वास के साथ सोचती है
छह महीने बाद
फ़सल लहराएगी मेरे खेत में
वह उसी आस से
काम करती जा रही है, खेत में

ढोलक वाला

एक दिन घर पे
बैठी थी अकेले
भाई–बहन चले गए स्कूल
माता–पिता बाज़ार
क्योंकि अगले दिन था त्योहार

पड़ोसी के घर के आगे से
मुझे सुनाई दी ढोलक की आवाज़
ढम–ढम ढम्मक–ढम्मक
ढम–ढम ढम्मक–ढम्मक

अचानक एक सहेली आई मेरी
मुझे बुलाने के लिए
मैं दरवाज़े बंद करके
चली गई उसके साथ बाहर
तब तक वह ढोलक वाला
आ गया मेरे घर के गेट तक

वह था तो उदास
फिर भी बजा रहा था ढोलक ज़ोर–ज़ोर से
पड़ोसी के घर से कुछ न मिला था उसे
वह बजा रहा था बार–बार
ढम–ढम ढम्मक–ढम्मक
ढम–ढम ढम्मक–ढम्मक

उसने मुझसे कहा त्योहार है कल
कुछ दे दो रुपया
मैंने सोचा, 'रुपया दे दूँ
या सहेली के साथ चली जाऊँ'

सहेली बोली ऐसे तो आते रहते हैं
चल फ़टाफ़ट मेरे साथ

फिर मैंने कुछ बहाने बनाकर
बाद में आने को कहा उसे
और चली गई सहेली के साथ
पर सोचती रही रास्ते भर
कला है उसके पास
ढोलक बजाने की,
सुबह से लगा है
घरों के आगे ढोलक बजाने में
मैंने दे देना था कुछ रुपैया उसको

वह सुबह से घूम रहा था
ढोलक बजा–बजा के थक गया होगा
अगर वह सम्पत्ति वाला होता तो
यूँ घर–घर डोलकर
क्यों बजाता ढोलक

सोचा दे देती दो–चार रुपये
क्या बिगड़ जाता हमारा
लेकिन तबसे आज तक
मेरे घर पर रहते हुए
वह ढोलक वाला
अभी तक आया ही नहीं

अनीता परिहार, मेहमान शिक्षिका,
बोदल

कविता बाई,
फूल

आलू की तेज़ तरकारी

आलू की तेज़ तरकारी
मरी री मैं तो गर्मी की मारी

गर्मी लगे तो साबुन से नहा लो
साबुन से चल गई बीमारी
मरी री मैं तो गर्मी की मारी

गर्मी लगे है तो पंखा चला लो
पंखे की टूट गई डाँडी
मरी री मैं तो गर्मी की मारी

गर्मी है इतनी तो छत की हवा लो
छत तो तपे रे बड़ी भारी
मरी री मैं तो गर्मी की मारी

आलू की तेज़ तरकारी
मरी री मैं तो गरमी की मारी

राजकिरन्ता बाई बैरवा, 13 वर्ष,
समूह–फूल, कटार–फरिया

फौजी दादा

काला बादल

बादल आया, बादल आया
काला बादल, पानी लाया
हवा चली जब
फर–फर–फर–फर
पानी बरसा
सर–सर–सर–सर
पानी गाए
रुक–रुक–रुक–रुक
बच्चे नहाये
झुक–झुक–झुक–झुक

ऐसा है बरसा का पानी
नहाये जिसमें चींटी रानी
बादल बरसे और झमा–झम
नाचे जिसमें मोर छमा–छम

सुरेश प्रजापत, 10 वर्ष
समूह–बादल, बोदल

किरोड़ी गुर्जर
गुलशन

ई बरसात में

बादल गरज–गरज बाज्यो रे
बरसात आयी रे
ई बादल की बरसात में
मू तो न्हाई रे

ई बरसात में
म्हारा खेत भर गया रे
ई बरसात में
म्हाकी फ़सल खूब होगी रे

आरती मीना, 11 वर्ष,
समूह–झील, जगनपुरा

चाऊँ भाऊँ खाऊँ

चिड़िया करती चाऊँ–चाऊँ
कुत्ता करता भाऊँ–भाऊँ
बिल्ली करती म्याऊँ–म्याऊँ
कौआ करता काऊँ–काऊँ
लेकिन पेटू करता हरदम
खाऊँ–खाऊँ खाऊँ–खाऊँ

सेजल, 8 वर्ष,
समूह–रंगोली

ब्रजेश गुर्जर, फूल, 13

ऊँट का फूल

फूलों के गाँव में तरह–तरह के फूल थे। आक के फूल, अड़सूटा के फूल, कटैड़ी के फूल, आम के फूल, नीम के फूल, बबूल के फूल।

आक के फूल की शक्ल घुँघरू जैसी थी। परदेसी आक के फूल की शक्ल शहनाई से मिलती थी। इस तरह हरेक फूल में कोई न कोई खूबी थी। कटैड़ी के फूलों को देखकर लगता था जैसे वे पीले पानी के बने हैं। बबूल के फूल का रंग देखकर सोने के रंग की याद आ जाती थी।

एक दिन फूलों के गाँव में एक ऊँट आया। आक के फूल ने उससे पूछा– ''तुम क्या चीज़ हो जी ?मैं तो फूलों की दुनिया के सिवा और किसी दुनिया को जानता नहीं। तो क्या तुम बताओगे कि तुम किस दुनिया के हो ?''

ऊँट ज़रा अकबका गया। बोला– ''किसी और दुनिया से क्या मतलब है तुम्हारा?मैं इसी दुनिया का हूँ।''
''इसी दुनिया के हो तो यह बताओ कि तुम किसके फूल हो ?'' आक के फूल ने अगला सवाल पूछा।

ऊँट कोई जवाब नहीं दे पाया। आक के फूल ने उसे प्यार से कहा– ''देखो तुम बहुत ऊँचे हो। तुम अपनी डाली से कहो कि वह तुम्हें थोड़ा नीचे झुका दे ताकि हम आराम से बात कर पायें।''
''मेरी कोई डाली वाली नहीं है।'' ऊँट ने परेशान होते हुए कहा।
''डाली ही नहीं है।'' आक के फूल को अचरज हुआ और हँसी आ गई–''तब तुम किस पर लटक रहे हो ?''
''मुझे कहीं लटके रहने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं अपने पैरों पर सीधा खड़ा रह सकता हूँ।''–ऊँट ने कहा।
''क्या तुम्हारी जड़ों को पैर कहते हैं ?''–फूल ने मामले को समझने के लिए यह सवाल पूछा।
''तुमसे उलझने से तो अच्छा है मैं यहाँ से भाग जाऊँ।''–ऊँट ने झल्लाते हुए कहा।

फूल ने बहुत प्यार से ऊँट से कहा–''शायद तुम्हें कुछ बुरा लगा है। पर जहाँ तक मैं समझता हूँ, धूप अभी इतनी तेज़ नहीं हुई है कि फूलों को बुरा लगने लगे और वे कुम्हला जाएँ। क्या तुम किसी वजह से कुम्हला रहे हो ?''
''हाँ, मैं तुम्हारे सवालों से कुम्हला रहा हूँ।'' –ऊँट ने कहा।
''देखो जो जिस पेड़, पौधे या झाड़ी पर लगा होता है वह उसी का फूल होता है। इस तरह तुम बताओ कि तुम किसके फूल हो ?'' फूल को यह अजीब लग रहा था कि दुनिया में कोई किसी का फूल न हो।

''देखो, मैं एक ऊँट हूँ कोई फूल नहीं।''–ऊँट ने हाँफते हुए कहा।
फूल ने कोमलता से समझाया– ''ऊँट हो ?तो तुम ऊँट के फूल हुये। अब देखो, कैर है तो कैर के फूल हैं। रोहिड़ा है तो रोहिड़ा के फूल हैं। इस तरह तुम ऊँट हो तो ऊँट के फूल हुये कि नहीं ?''

ऊँट को फूल की यह वाली बात सच्ची भी लगी और अच्छी भी। उसकी इच्छा हुई काफ़िले में जाकर दूसरे ऊँटों को भी यह नई जानकरी दे। उसने आक के फूल को 'फिर मिलेंगे' कहा और कूदता–फलांगता काफ़िले में जा पहुँचा। जाते ही उसने सबको बताया कि हम सब ऊँटों के फूलों हैं।

ऊँटों ने कहा– ''यह क्या होता है ?'' और उसकी बात समझने से इंकार कर दिया।

प्रभात

ज्योति मीणा, झील

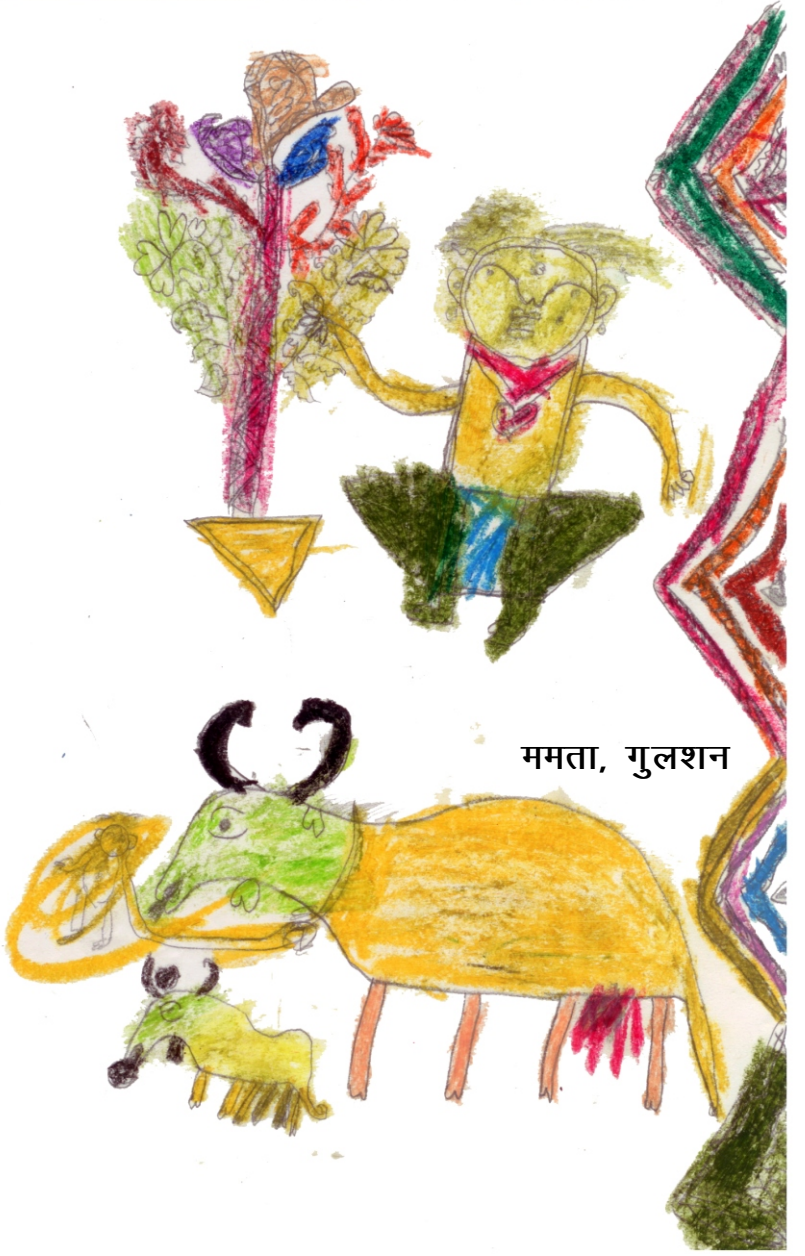

ममता, गुलशन

मम्मी–पापा की याद

एक बार एक लड़की थी। उसकी मम्मी नहीं थी। उसे अपनी मम्मी की बहुत याद आती थी। वे लोग बहुत गरीब थे। एक दिन उसके पापा बहुत दूर कमाने गए। वे अपनी बेटी को भी साथ ले गए। वहाँ उन्होंने अपनी बेटी को होटल में छोड़ दिया और खुद काम पर चले गए। वह सुबह छह बजे उठते थे और रात के दस बजे आते थे। वह लड़की तो छह बजे नहीं उठ सकती थी। इसलिए जब उसके पापा जाते तो वह उनसे मिल ही नहीं पाती थी। एक दिन उस लड़की को अपने पापा की इतनी याद आई कि वह होटल से बाहर चली गई। बाहर सड़क पर उसका एक्सीडेंट हो गया। फिर भी वह खड़ी हुई और भागती गई। फिर उसको एक बस मिली। उस बस में उसके पापा थे। उस लड़की को अपने पापा दिखे तो उसमें इतनी हिम्मत आ गई कि वह चलती बस में ही चढ़ गई। और अपने पापा के पास चली गई।

रेनी
समूह–रंगोली, सवाई माधोपुर

पत्ता और ढेला

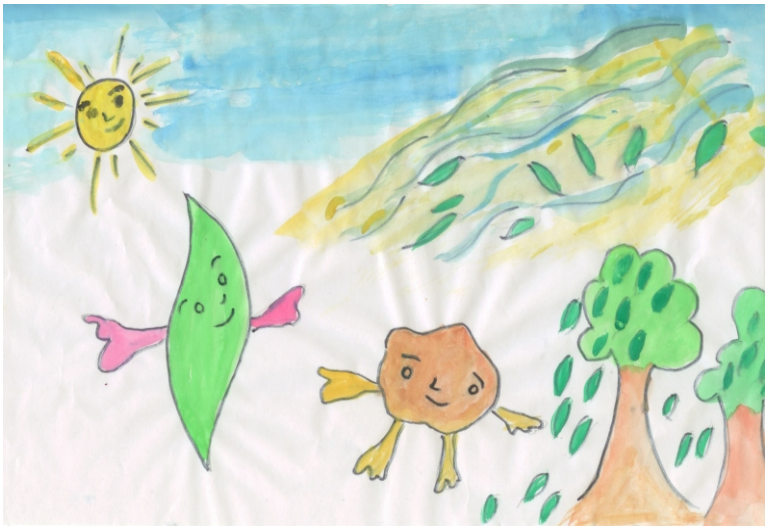

एक था मिट्टी का ढेला, एक था आम का पत्ता। दोनों में बहुत गहरी दोस्ती थी। एक दिन पत्ते ने ढेले से कहा, ''ढेला भाई आज बहुत गर्मी है, लगता है आँधी आयेगी। मैं तो हल्का हूँ, आँधी मुझे उड़ा कर तुमसे बहुत दूर ले जाएगी। फिर हम शायद ही कभी मिल पाएँ।'' ढेले ने कहा, ''पत्ते भाई, तुम कतई मत घबराओ। जैसे ही हवा तेज़ होने लगेगी, मैं तुम्हारे ऊपर बैठ जाऊँगा। तब तुम्हें हवा उड़ाकर नहीं ले जा सकेगी।''

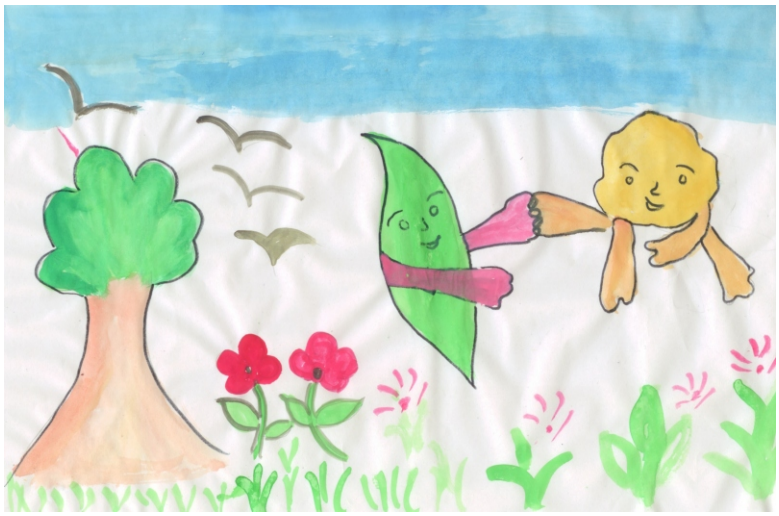

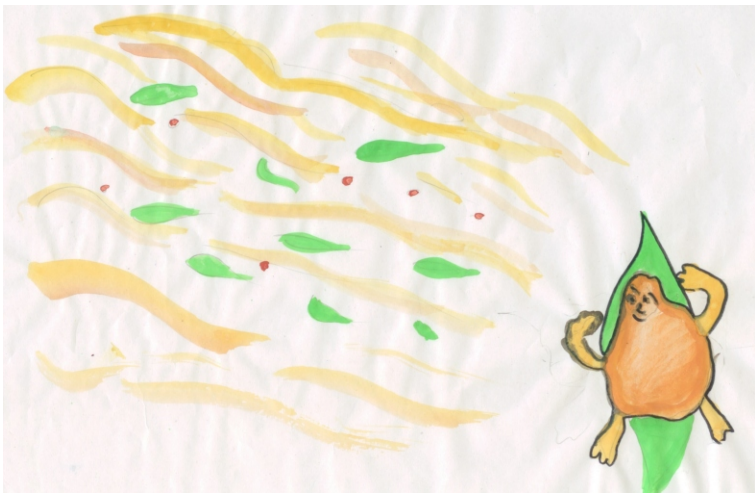

थोड़ी ही देर में तेज़ हवा चलने लगी। ढेले ने पत्ते को दबा लिया। तेज़ आँधी आई और चली गई। पत्ता बोला, ''ढेला भाई! तुमने तो मुझे बचा लिया। मगर इस जीवन में मैं तुम्हारी क्या मदद कर पाऊँगा भला।''

एक दिन आकाश में काले–काले बादल छा गये। ढेला पत्ते से बोला, ''अब हमारे बिछुड़ने की घड़ी आ गई है। ऊपर काले–काले बादल देख रहे हो, थोड़ी ही देर में तेज़ बारिश होगी। पानी मुझ पर पड़ेगा और मैं गलकर मिट्टी में मिल जाऊँगा।''

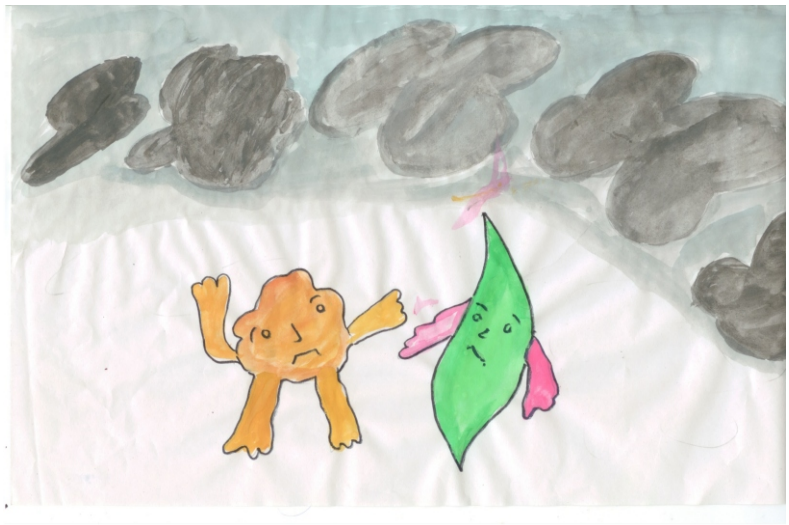

पत्ते ने कहा, ''मेरे होते तुम डरते क्यों हो ?मैं तुम्हारा साथ दूँगा। बूँदें आकाश से चली नहीं कि मैं तुम्हारे ऊपर छतरी सा तन जाऊँगा। तुम पर पानी नहीं पड़ेगा न ही तुम गलोगे।''

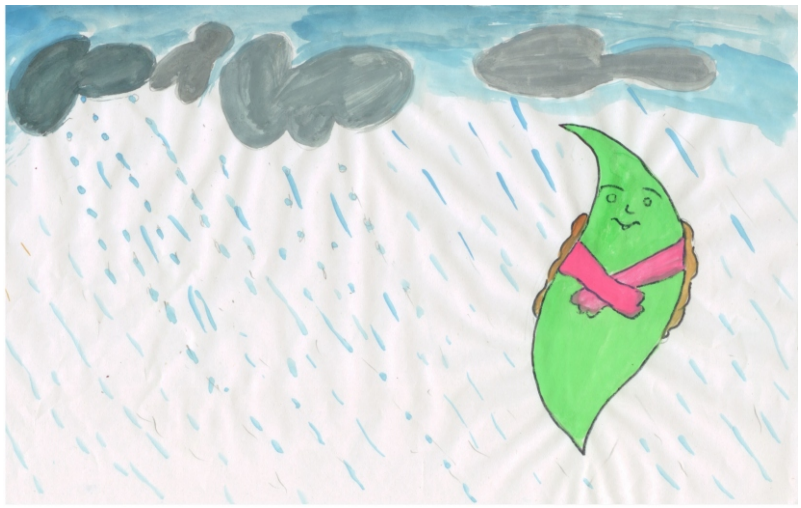

ऐसा ही हुआ भी, थोड़ी देर में बारिश होने लगी। पत्ते ने ढेले को ढक लिया, और वह गलने से बच गया।

चित्र–सपना राजावत

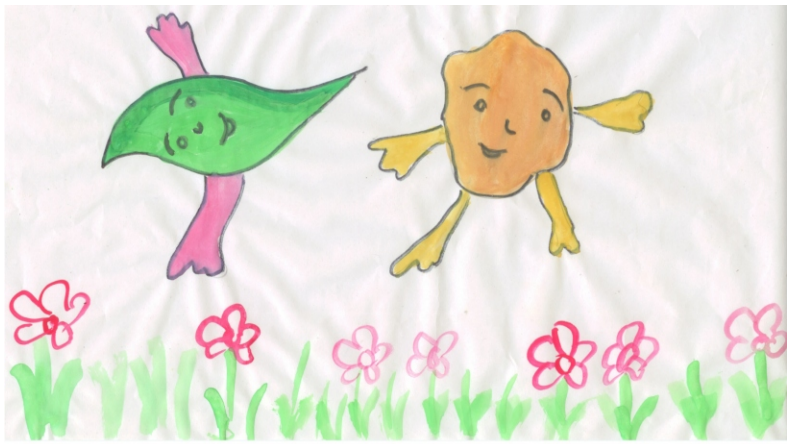

कुत्ते से बातचीत

(रावल की सड़क पर भटकते हुए इस कुत्ते से मेरी मुलाकात जगनपुरा में चाय की थड़ी के सामने वाले नाले पर हुई।)

कमलेश आपका नाम क्या है ?

कुत्ता देखिये वैसे मेरा नाम कुत्ता है लेकिन कई लोग मुझे गण्डक भी कहते हैं।

कमलेश आपको सबसे अधिक खुशी कब मिलती है ?

कुत्ता जब गाँव में शादी–विवाह आदि मौकों पर रसोई बनती है तब मुझे लोगों के द्वारा छोड़ा गया भोजन पेट भर कर खाने को मिलता है।

कमलेश अपने परिवार या रिश्तों के बारे में कुछ बतायें।

कुत्ता मुझे माँ–बाप, भाई–बहिन के बारे में कुछ याद नहीं है। होश संभालने के बाद सेमोहल्ले के कुछ दोस्तों के साथ रह कर पला बड़ा हूँ।

कमलेश अपने दोस्तों के बारे में कुछ बतायें।

कुत्ता मेरे कुछ दोस्त जो देखने में अच्छे व हृष्ट–पुष्ट थे, उन्हें लोगों ने पाल लिया और घरों में ही बाँधकर रखते हैं। उन्हें खाना–पीना, रहना वहीं मिल जाता है। मेरी तरह वे इधर–उधर नहीं भटकते हैं। एक दो साथी की किस्मत और भी अच्छी निकली वे शानदार घरों में रहते हैं, साबुन से रोज नहाते हैं, बिस्तरों पर सोते हैं और दूध–रोटी, बिस्कुट आदि मज़े से खाते हैं।

कमलेश सुना है आप कुछ बदमाशी भी करते हो ?जैसे घरों में घुस कर कुछ खा जाना या लोगों को काट लेना। ऐसा क्यों ?

कुत्ता ये सब अफ़वाहें हैं जिन पर ध्यान नहीं देना चाहिए। देखिए, जब खाने को नहीं मिलता है तब हम घरों में घुसने को मजबूर हो जाते हैं और जब लोग बेवजह सताते हैं तो गुस्से में कभी–कभार, सौ में से एक बार किसी को काट भी लेते हैं।

कमलेश एक आखिरी सवाल, आप किस तरह का जीवन जीना पसन्द करेंगे ?

कुत्ता मैं शान्तिपूर्ण जीवन जीना पसन्द करूँगा। लोग हमें थोड़ा बहुत खाने को दे दें और बदले में हम भी लोगों के घरों की चोरों, डाकुओं और पुलिस से हिफ़ाज़त करते रहें। किसानों के खेतों की रोजड़े आदि जानवरों से रखवाली करते रहें।

कमलेश धन्यवाद।

कुत्ता आपको भी बहुत–बहुत धन्यवाद। आपके दूसरे साथियों और बच्चों से भी कहिए कि हमारा इंटरव्यू लें। और हमारा ही क्यों, चिड़ियों, चीटियों, गिलहरियों और बाघों के भी इंटरव्यू लीजिए। इस बहाने कुछ बात हो जाती है तो अच्छा लगता है। और तो क्या है। अच्छा मैं चलूँगा, सामने से कुछ अजनबी आ रहे हैं। मुझे उन्हें देखकर भौंकना है।

कमलेश जी हाँ, जी हाँ। ज़रूर। शुक्रिया।

कमलेश, शिक्षक, जगनपुरा

क्या होता है कहानी लिखने से?

कहानी छपती है तो हमे अच्छा लगता है। कहानी पढ़ते हैं जब हम अपने मन में सोचते हैं तो हमें मजा आता है।
हमारी कहानी दूसरे भी पढ़ लेते हैं। जब कोई परेशान हो, मन नहीं लगे तो कहानी पढ़ कर अच्छा लगता है।
–भारती गुर्जर,
–दीपक मीणा
समूह–तारा, कटार–फरिया

कहानी हमें बहुत अच्छी लगती है। कहानी लिखने से हमारी राइटिंग सुधरती है। और हम कहानी को लिखकर मोरंगे में भेजते हैं। हमारी अच्छी कहानी मोरंगे में छप जाती है। कहानी से हम मास्टर बन सकते हैं। धीरे–धीरे हम कहानी बहुत अच्छी बना लेते हैं। और हम लेखक बन सकते हैं। और अच्छी कहानियाँ टीवी में भेज सकते हैं। हम कहानियाँ पढ़कर माता–पिता को सुना सकते हैं।
–राजेन्द्र सैनी, रामवीर, 11 वर्ष, झील समूह, जगनपुरा

कहानियों की किताब छपकर आती है और बच्चे किताब पढ़ते हैं। और हमारा नाम आगे बढ़ जाता है। और छोटे बच्चे भी कहानी लिखते है।
–पायल 9 साल, झील समूह, जगनपुरा

बच्चे कहानी पढ़ते हैं। पढ़कर बहुत खुशी होती है। खुश होकर बच्चे भी कहानी बनाते हैं। हमारा नाम आगे बढ़ता है। हम कलाकार बन जाते हैं।
–सीमा, 9 साल –रीना 8 साल झील समूह, जगनपुरा

हम कहानी लिखेंगे तो हमारी लिखी हुई कहानी को सब लोग पढ़ेंगे। अगर कहानी अच्छी होगी तो मोरंगे में प्रकाशित होगी फिर चकमक में प्रकाशित होगी जिससे हमारी कहानी का प्रसार होगा। धीरे–धीरे हम अच्छी कहानी लिखने लग जायेंगे। फिर हम लेखक बन जायेंगे और बच्चों व बड़ों के लिए अच्छी–अच्छी कहानी की किताबें लिखेंगे। हमारी कहानी पढ़कर सब लोग कहेंगे की फलां गाँव का लड़का बहुत अच्छी कहानी की किताबें प्रकाशित करता है। सब लोग हमारी बड़ाई करेंगे। और हमारी लिखी हुई किताबें खरीदेंगे।
–मनराज मीना, 12 वर्ष
सागर, जगनपुरा

कहानी क्यों ?

कहानी लिखने से क्या होता है?कहानी क्यों लिखते हैं?तुम्हें कहानी लिखने को क्यों कहा जाता है?तुम्हारे इस सवाल में कई सवाल छिपे हैं।

इन सवालों में एक सवाल मैं भी जोड़ देती हूँ। अगर कहानी न होती तो क्या होता?क्या तुमने सोचा है कभी?कहानी न होती तो परियों का देश न होता, राजा–रानी के किस्से न होते। न देवी–देवता होते न उनकी हम मिसाल देते। अलाव को घेरे शिकारी जंगल की कहानियाँ कभी न सुनाते। व्यापारी दूर–देश के अजूबों का बखान बाकी दुनिया में न फैलाते। इतिहास कभी लिखा ही न जाता। हमें न अतीत का ज्ञान होता, न ही पड़ौसी देशों या गाँव की खबर। बड़ी बेरंग होती हमारी दुनिया। कुछ–कुछ कुँए के उस मेंढ़क की तरह।

कहानी न होती तो किसी की खुशी, किसी का दर्द, किसी का गुस्सा समझने की संवदेनशीलता हममें होती ही न। हमें यह भी तो पता नहीं चलता कि भालू को जोरों से भूख लगती है तो वह अपनी चड्डी भी खा लेता है और कहानिका चाँद की नदी में पानी की परछाई के साथ टहलती भी न होती। बड़ा गज़ब हो जाता, है न?

हम जब भी अपने विचारों को, कल्पनाओं को, अनुभवों को दूसरों से बाँटना चाहते हैं तो बातचीत से या अपने खयालों को लिखकर दूसरों तक पहुँचाते हैं। लेख का रूप जो भी हो – कहानी, कविता, निबंध, संस्मरण, नाटक, कोशिश यह रहती है कि भाषा का प्रयोग इस कुशलता से हो कि पढ़ने वाले न सिर्फ़ विषय को सटीक समझें, बल्कि लेखन इतना दिलचस्प हो कि पढ़ने का आनंद आ जाए।

मोरंगे का प्रूफ़ पढ़ते हुए मैंने कई बच्चों की यह शिकायत अक्सर पढ़ी है कि उनकी कहानी/कविता कभी नहीं छपती। यह स्वाभाविक है कि हरेक इंसान की अलग–अलग विषय में दिलचस्पी और काबिलियत हो। अब दूसरा सवाल यह है कि तुम्हारी कविता/कहानी छपती नहीं फिर भी तुम्हें लिखते रहने को क्यों कहा जाता है ?इसका जवाब आसान तो नहीं पर अहम है।

भाषा केवल तुम्हारे पाठ्यक्रम का विषय ही नहीं यह सम्प्रेषण का माध्यम भी है और औज़ार भी। साहित्य में न सही किसी भी विषय में रुचि हो तो उसे पढ़ने, समझने, चर्चा करने या उस पर लिखने के लिए भाषा तो चाहिए न ? भाषा पर जितनी अच्छी पकड़ होगी तुम अपने चुनिंदा विषय में अपनी कुशलता को उतना आगे ले जा पाओगे। और अगर साहित्य में रुचि हो या लेखक बनने की चाह हो तो साहित्य पढ़ने और लिखने के मौकों से बेहतर क्या हो सकता है ? कहानी/कविता लिखने का मकसद यह नहीं कि मोरंगे में छपे ही, बल्कि यह है कि हम अच्छे लेखन की सराहना करना सीखें। ज़रूरी यह नहीं है कि तुमने जो लिखा वह कितना दिलचस्प या उबाऊ है, सुलझा हुआ है या बेतुका है, किसी और से बेहतर या बुरा है। ज़रूरी यह है कि तुमने अपनी सोच को सफ़लता से अभिव्यक्त किया।

कहानियों की एक और अहमियत है, राज़ की बात है पर तुम्हें बताती हूँ।
कहानी/ कविताएँ तुम्हें अपनी दुनिया से अलग एक और दुनिया में ले जाती हैं। जब कोई कहानी कविता लिखता है तो वह एक अनूठी दुनिया की रचना करता है। अब चाहे वह काल्पनिक हो या वास्तविकता से प्रेरित। जब लेखक कहानी बुनता है तो वह कहानी के पात्र, उसमें धट रही घटनाओं में लीन हो जाता है और जब इस दुनिया की रचना पूरी हो जाती है तो उसे बहुत संतुष्टि मिलती है। फिर जब तुम उस कहानी को पढ़ते हो तो उस अनोखी दुनिया में अनायास बस जाते हो। तब माँ की डाँट, पिताजी की मार कुछ याद नहीं रहता, कुछ आड़े नहीं आता, तुम्हारे और उस मनमोहक दुनिया के बीच। सोचो तो ज़रा कितनी शक्तिशाली होती है कहानियाँ कि वे तुम्हें बैठे–बिठाए इस दुनिया से किसी और दुनिया में पहुँचा सकती है।

अच्छा, बताओ, अगर तुम अपनी दुनिया बना सकते तो तुम्हारी दुनिया कैसी होती?क्या लोग हवा में उड़ते, जानवर गाना गाते, पेड़–पौधों पर किताबें फलतीं, खेत–खलिहान में चॉकलेट उगतीं, इन्द्रधनुष के रंग के होते झरने–नदिया?और एक ही दुनिया क्यों, जितनी चाहे उनती दुनिया बना सकते हो तुम। अलग–अलग रंग की, अलग–अलग ढंग की दुनिया। और जब कोई दूसरा तुम्हारी दुनिया में कदम रखेगा तो उसके लिए वह दुनिया उतनी ही सच्ची होगी जितना तुम्हारा विश्वास। ऐसा जादू गढ़ सकते हो तुम अपनी कहानियों से। तो खूब लिखो। जो कुछ भी तुम देखते हो, सोचते हो, महसूस करते हो। भरने दो उडान अपनी कल्पना को।

तुम सब बच्चों को ढेर सारा प्यार।

नताशा

महावीर, झील,9

अरविन्द

कविता बाई,
फूल

बुलबुल पार्टी की चम्पा

मैं आठ–दस साल की थी। हम बच्चों की एक टोली थी। उस टोली का नाम मेरे चाचा ने 'बुलबुल पार्टी रखा हुआ था। हम सभी साथी शाम के समय चाँदनी रात में खेलते थे। एक दिन की बात है, जब हम सभी बच्चे खेलने के लिए इकट्ठे हुए तो उनमें हमारी एक साथी चम्पा नहीं थी। हमारी टोली में यदि एक भी बच्चा नहीं आये तो हमारी पार्टी अधूरी मानी जाती थी। चम्पा के परिवार में आठ भाई–बहन थे। तीन भाई, पाँच बहन। चम्पा बहनों में सबसे बड़ी थी। उनकी घर की स्थिति पहले काफ़ी अच्छी थी। खूब ज़मीन–जायदाद थी, किन्तु उसके भाइयों ने सब बर्बाद कर दिया था। वे कोई काम नहीं करते थे। शराब पीते थे तथा सट्टा खेलते थे इसलिए उनकी आर्थिक स्थिति दिनोदिन बिगड़ती चली गई थी। जब चम्पा खेलने नहीं आई तो हमने कारण जाना कि चम्पा खेलने क्यों नहीं आई?हमें बताया गया कि चम्पा की शादी होने वाली है। मैं बहुत खुश हुई कि चम्पा की शादी होने वाली है। जब शादी होती है तो खूब सारे नये–नये कपड़े आते हैं, खूब मस्ती करते हैं, खूब मिठाइयाँ बनती है तथा एक लड़का दूल्हा बनकर भी आता है। हम खुश हो रहे थे कि हमारी पार्टी में एक और सदस्य बढ़ेगा, उसको भी हम साथ में खिलायेंगे। चम्पा का दूल्हा नया पार्टी मेम्बर होगा। हम सभी चम्पा के घर पहुँच गये। चम्पा को देखने व खेलने के लिए बुलाया। चम्पा की मम्मी ने कहा कि यह अब नहीं खेलेगी। तुम यहाँ से जाओ। उधर से झाँक रही चम्पा का खेलने का खूब मन था। उस दिन हम कोई भी खेल नहीं खेले तथा अपने–अपने घर चले गये।

घर जाकर मैं रोने लगी। मम्मी ने पूछा, ''क्यों रो रही हो ?'' मैंने कहा कि चम्पा की तो शादी हो रही है। मेरी भी शादी करो। कोई दूल्हा ढूँढो। मम्मी मेरी बात सुनकर बहुत हँसी। बोली, ''बेटा, चम्पा के लिए तो उसके मम्मी–पापा ने दूल्हा ढूँढ लिया है अब हम भी तुम्हारे लिए दूल्हा ढूँढेंगे।'' फिर मैं उस बात को भूल गई, उधर चम्पा के घर शादी की तैयारियाँ होने लगी। इस बीच मैंने अपनी दादी और पड़ोस की महिलाओं को यह कहते सुना कि इसने तो लड़की को बेच दिया है, 10–15 हज़ार रुपये लिये हैं। अभी तो शादी के लायक लड़की की उम्र भी नहीं है। मैं यह नहीं समझती थी कि लड़की को कैसे बेचते हैं ?दादी कह रही थी उसके दूर के रिश्ते में मौसाजी ने सौदा तय करवाया है। अब वो दिन भी आ गया जब चम्पा का दूल्हा आ गया था। हम उसको देखने के लिए बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। चम्पा के हल्दी लगाई जा रही थी। उसे नहलाया जा रहा था, नये कपड़ों के साथ–साथ खूब सारे गहने भी पहनाये गये। चम्पा बिल्कुल गुड़िया जैसी लग रही थी। हम सब चम्पा का दूल्हा देखने चले गये कि उससे दोस्ती करके उसे भी बुलबुल पार्टी में शामिल कर लेते हैं। लेकिन चम्पा के दूल्हे को देखकर हम तो हक्के–बक्के ही रह गये। क्या दूल्हा ऐसा होता है?ये तो एक बड़ा सा आदमी था। एक पैर से लंगड़ा भी था। हम सभी बच्चे उसे देखकर रोने लग गये। दादी ने पूछा क्यों रो रही हो ?मैंने कहा कि चम्पा का दूल्हा तो बड़ा आदमी है। मैंने अपने लिए दूल्हा ढूँढने के लिए कहा था न। अब मत ढूँढना मेरे लिए दूल्हा। पापा ने बात का बतंगड़ होते देखकर कहा कि ठीक है, नहीं करेंगे तुम्हारी शादी लेकिन रोओ मत। हमने उधर चम्पा से जाकर कहा कि तेरा दूल्हा तो आदमी आया है, हम उसे कैसे खिलायेंगे ?चम्पा कुछ भी नहीं बोली। फिर चम्पा और हम सबने खाना खाया। खाना खाकर हम सोने चले गये। मैं भी चम्पा के साथ ही सो गई थी। मैंने चम्पा से कहा था कि तू जगे तब मुझे भी जगा लेना। रात के दस–ग्यारह बजे चम्पा को जगाने उसके पापा–मम्मी आये। आवाज़ सुनकर मैं भी जाग गई। चम्पा नींद में थी। उसके पापा कह रहे थे, ''चम्पा! उठ तुझे फेरे खाने हैं।'' चम्पा ने कहा, ''मैंने पेड़े खा लिए, आप खा लो।'' ऐसा कहकर वह वापस सो गई। चम्पा के पापा ने उसे गोद में उठाया और नीचे ले गये। मैं भी उनके पीछे–पीछे चली गई। मैंने देखा कि चम्पा के पापा चम्पा को गोद में लेकर उस दूल्हे के पीछे–पीछे घूम रहे हैं। सात–आठ बार घूमकर चम्पा को सुला दिया। मैं सोचने लगी ऐसा क्यों किया? और सोचते–सोचते सो गई। सुबह उठी तो पता चला कि चम्पा अपने ससुराल चली गई। मैंने घर जाकर मम्मी से पूछा, मम्मी चम्पा मुझे क्यों नहीं ले गई ?मैं रोने लग गई। मम्मी ने मुझे समझाया, ''बेटी, चम्पा अब कभी तुम्हारे साथ नहीं खेलेगी।''

हम अब धीरे–धीरे चम्पा को भूलने लग गये थे। चम्पा अब कभी ससुराल से आती तो उसे हमारे साथ खेलने नहीं दिया जाता था। उसकी मम्मी कहती थी, ''अब तेरी शादी हो गई, तू घर का काम सीख।'' हम उसे बुलाने जाते थे तो हमें डाँटकर भगा दिया जाता था। इसके बाद वह ससुराल से बहुत दिनों तक नहीं आई। हम उसे भी लगभग भूल गये थे। धीरे–धीरे समय बीतता गया। आज चम्पा के तीन बच्चे हैं। चम्पा मुझसे मिलने आती है। मेरे गले लगकर खूब रोती है और कहती है कि तुम तो अभी तक पढ़ रही हो। अगर मैं भी पढ़ती तो

शायद तुम्हारे जैसी ही काम करती। किसी के भरोसे तो नहीं रहती। वह अपने माता–पिता को गाली देते हुए कहती है कि मेरे माता–पिता ही मेरे दुश्मन बन बैठे। ऐसे माता–पिता किसी के न हों।

वह बताती है कि उसका पति खूब शराब पीता है, चोरी करता है और उसके सारे गहने चोरी करके बेच चुका है। मना करने पर उसे डण्डों से मारता है। चम्पा पीहर आती है तो अपने माता–पिता से कहती है कि मुझे पता है तुमने ऐसे घर में मेरी शादी क्यों की?तुम्हें पता था कि वह लड़का चोरी करता है, शराब पीता है और कोई काम धन्धा भी नहीं करता है। मुझे ससुराल में ताने दिये जाते हैं कि तुझे तो हमने खरीदा है। उसके माता–पिता कहते हैं कि इसमें हमारा क्या दोष है, यही तुम्हारे भाग्य में लिखा था। चम्पा कहती है कि ऐसा भाग्य तुमने बनाया है मेरा। क्या अब मेरे बच्चों की ज़िम्मेदारी तुम सम्भाल लोगे ?

वह कहती है कि मैं क्या करूँ, बच्चों को कैसे पढ़ाऊँ। मैं नहीं चाहती कि जो मेरे साथ घटित हुआ वह मेरे बच्चों के साथ भी हो। मेरा पति कुछ भी ध्यान नहीं देता। मेरे अब दस–बारह साल की लड़की है। वह उसकी भी शादी का दबाव बना रहा है। चाहे कुछ भी हो जाये मैं अपनी लड़की की शादी नहीं करूँगी। उसे खूब पढ़ाऊँगी और अपने पैरों पर खड़ा करूँगी।

कविता शर्मा, शिक्षिका,
उदय सामुदायिक पाठशाला, जगनपुरा

मुकेश महावर, फुल

ममता गुलशन

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ बूझो यार पहेलियाँ

1
जहाँ–जहाँ चलते हैं,
वहाँ–वहाँ साथ रहती है।

2
एक टोप, दो नली,
जाड़े में जलधार चली।

3
छोटा था जब हरा था
बड़ा हुआ तो लाल हो गया।

4
हरी–हरी डूँगरी
पीला पीला फूल।

5
गर्मियों में छोरी–छापरी
सर्दियों में डोकरी।

श्रीमोहन मीणा,
समूह–सागर, जगनपुरा

पिछले अंक की पहेलियों के जवाब इन्होंने भेजे हैं–
सुधा जी, शाला–सहायक, कर्मा, नरेशी, अनूप, दिलखुश सैनी, बीना मीणा, समूह–सागर गोलू कुम्हार, सविता, समूह–दीप।

हीहीही–ठीठीठी

- एक मोटे–ताज़े व्यक्ति ने एक पतले–दुबले व्यक्ति से मज़ाक किया– तुझे देखकर लोग तो यही समझेंगे शहर में खाने का अकाल पड़ा है।
  दुबला व्यक्ति– और तुझे देखकर लोगों को यह भी पता लग जाएगा कि अकाल क्यों पड़ा है।

- ग्राहक– आपको यह याद होगा कि मैं आपसे एक मेज़ ले गया था।
  दुकानदार– हाँ,हाँ क्यों नहीं।
  ग्राहक– यह तो चार दिन भी नहीं चल पायी।
  दुकानदार– अरे ! साहब, आपने उसे चलाने की कोशिश क्यों की, वह तो एक जगह रखने के लिए थी।

- दूधवाला– बहनजी आज दो किलो की जगह एक किलो ही दूध मिलेगा।
  औरत– क्यों ?
  दूधवाला– क्योंकि आज कल पानी की किल्लत चल रही है।

- शिक्षक– वर्षा से बचने के लिए क्या करना चाहिए।
  बच्चा– श्रीमानजी, स्कूल नहीं जाना चाहिए।

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

भारती गुर्जर, 8 वर्ष, तारा समूह, की लिखी इस पंक्ति पर कविता लिखकर भेजो–

चिड़ियों के रहते हैं घास फूलों के घर

लाली, 5 वर्ष, जगनपुरा की लिखी इस कहानी को आगे बढ़ाते हुए पूरा करो और मोरंगे को भेजो–

एक बिल्ली कुँए पर खेत की रखवाली करने गयी। वह मांडे पर बैठी थी। वहाँ एक रोजड़ी आयी। वह मांडे को हिलाने लगी। बिल्ली ने नीचे देखा, ''यह क्या है?अरे यह तो रोजड़ी है।'' वह रोजड़ी को खेत से बाहर भगाकर आयी। फिर वह गाय चराने गयी साथ में छाता भी लेकर गयी।

बनवारी लाल मीणा, उम्र–12 वर्ष, झील समूह, जगनुपरा द्वारा
भेजी इन पंक्तियों को बच्चों ने आगे बढ़ाते हुए ये कविताएँ लिखी हैं–

1
घर वे दूर से चमक रहे थे
उनमें पक्षी धमक रहे थे1
नाचगान वे कर रहे थे
ढोलक पेटी बजा रहे थे
भोजन पानी हो रहा था
सगे–संबंधी मिल रहे थे
वे सब बातें कर रहे थे
शादी–ब्याह हो रहे थे
लाडा केश संवार रहा था
लाडी को पुकार रहा था
लाडी दौड़ी आ रही थी
लाडा के संग गा रही थी
मनराज मीणा, 12 वर्ष,
समूह–सागर, जगनपुरा

2
पक्षी चें–चें बोल रहे थे
आसमान में चमक रहे थे
तारे टिम–टिम टमक रहे थे
पेड़ धम–धम धमक रहे थे
पत्ते वहाँ हिल रहे थे
लोग वहाँ मिल रहे थे
सविता, 12 वर्ष,
समूह–दीप, जगनपुरा

3
महल वे दूर से चमक रहे थे
उनमें सैनिक धमक रहे थे
पहाड़ वे दूर से चमक रहे थे
पेड़ उनमें धमक रहे थे
स्कूल वे दूर से चमक रहे थे
बच्चे उनमें धमक रहे थे
घर हमारा चमक रहा था
उसमें मैं धमक रही थी
कर्मा मीणा, 11 वर्ष,
समूह–सागर, जगनपुरा

4
पेड़ फलों से भरे हुए थे
स्कूल बच्चों से भरे हुए थे
चूल्हे घरों में जल रहे थे
उनमें रोटी सिक रही थी
लोग रोटी खा रहे थे
दिनेश मीणा, 12 वर्ष,
जगनपुरा

5
पास में सूरज धमक रहा था
खेत में लूगड़ी चमक रही थी
उनमें सितारे धमक रहे थे
पायल छम–छम बोल रही थी
घर में औरत डोल रही थी
बीना मीणा, उम्र–12 वर्ष
समूह–दीप, जगनपुरा

6
वर्षा ज़ोर से हो रही थी
मोर ज़ोर से बोल रही थी
शेर ज़ोर से दहाड़ रहा था
आदमी ज़ोर से भाग रहे थे
पाड़ी–पाड़ा रेंक रहे थे
हवा की दहाड़ सुन रहे थे
वर्षा की आवाज़ सुन रहे थे

नरेश गुर्जर, उम्र 9 वर्ष,
समूह–बादल, बोदल

7
गाय बोली भैंस से
भैंस बोली बकरी से
तू भी आके चमक
धर में आके धमक

रामराज, 13 वर्ष,
समूह–बादल, बोदल

8
रंग–बिरंगे
पक्षी वो पक्षी
कोई नीले, कोई पीले
कोई भारी, कोई फोरे
अम्मा–अम्मा चिल्ला रहे थे
दद्दा–दद्दा चिल्ला रहे थे

हरबीर गुर्जर, उम्र 13 वर्ष
समूह–बादल, बोदल

9
पापा उसका चमक रहा था
मम्मी उसकी धमक रही थी

राजेन्द्र गुर्जर 10 साल,
समूह बादल, बोदल

10
घर में लोग नाच रहे थे
घर हवा में उड़ रहे हैं
हवा कहती नाच दिखाओ
मकान कहते
हमें मत उड़ाओ
हम नाच दिखाएँगे

शेरसिंह गुर्जर 12 साल,
समूह बादल, बोदल

11
मोर चिड़िया कोयल तोता
सब मस्ती में चहक रहे थे
कोयल गाना गा रही थी
बंदर मामा नाच रहे थे
इतने में एक शेर आया
सबने उसको खूब नचाया
बारिश भी तो आ रही थी
बंदर मामा भीग रहे थे
आक्छी आक्छी छींक रहे थे
चुटकू चूहा लाया मिठाई
लड्डू बर्फी रसमलाई

मुकेश महावर 9 साल
ब्रजेश गुर्जर 10 साल
फूल–समूह, कटार–फरिया

इन बच्चों की कविताएँ भी अच्छी थीं। लेकिन जगह की कमी की वजह से छापी नहीं जा सकी है–अनूप मीणा, 12 वर्ष, समूह–सागर, जगनपुरा, बलवीर गुर्जर, उम्र 14 वर्ष, समूह–बादल, बोदल रणवीर गुर्जर, 12 वर्ष, बादल, बोदल।

कविता बाई, फूल

झील समूह की काली, उम्र 8 वर्ष, की भेजी कहानी राजा के कान को बच्चों ने अलग–अलग तरह से लिखकर भेजा है। यहाँ पढ़ें बच्चों की वे कहानियाँ–

राजा के कान

एक राजा था। उसके तीन कान थे। एक दिन वह जंगल में गया। उसे एक खरगोश दिखाई दिया। राजा खरगोश के पीछे भागा मगर वह राजा के हाथ नहीं आया। एक झाड़ी में छिपकर खरगोश गाने लगा, ''राजा के तीन कान। राजा के तीन कान।'' इस बात से राजा को बड़ा गुस्सा आया। घर आकर उसने रानी को पीट दिया। रानी ने कहा, ''अरे बैरी मुझे क्यों पीटता है ?'' राजा कहने लगा खरगोश ने ऐसा क्यों कहा कि राजा के तीन कान, राजा के तीन कान।
''तो क्या ऐसे कहता–
''राजा के चार कान
राजा के चार कान।''
राजा फिर रानी को पीटने दौड़ा तो रानी, राजा से भी तेज़ दौड़ी। और एक मटकी में जाकर सो गई।

1

राजा दूसरे दिन घोड़े पर बैठ कर शिकार खेलने गया तो दूसरे दिन उसे एक नाई मिला। राजा ने सोचा कि एक कान कटा लेते हैं। तो राजा ने नाई से कहा, कि नाई मेरा कान काट देगा?नाई बोला, ''काट तो दूँगा लेकिन मेरी कैंची भोंटी हो रही है। मेरे से जैसे कटेगा वैसा काटूँगा।'' राजा बोला, ''हाँ, ठीक है।'' राजा कान कटाने लगा तो नाई ने मज़ाक करते हुए राजा का आधा कान काट दिया। राजा घर गया तो रानी से कहने लगा, ''अब तू तीन कान का राजा कैसे कहेगी, मैं नाई के हाथ एक कान कटाकर आ गया हूँ।'' रानी ने देखा की राजा का आधा कान कटा है। रानी कहने लगी, ''राजा के ढाई कान, राजा के ढाई कान।'' राजा को और गुस्सा आ गया कि कैसे मेरे ढाई कान ?रानी बोली, ''कान को देख राजा।'' राजा ने देखा और कहा कि यह कान कटा तो है। रानी नहीं मानीं कहने लगी, ''ढाई कान का राजा।'' राजा गया और तलवार लेकर, अपनी गर्दन काट ली। रानी कहने लगी, ''बिना गर्दन का राजा।'' फिर राजा नहीं बोला।

चेतराम मीणा, उम्र–12 वर्ष,
समूह–सागर

2

रानी रूठकर भाग गई और जंगल में जाकर एक पेड़ के नीचे रोने लगी। तभी खरगोश आया और रानी से बोला, ''रानी जी, मुझे माफ़ कर दो, मैंने राजा से कहकर बड़ी भारी गलती कर

दी है। राजा ने तुमको घर के बाहर भगा दिया है।''

फिर खरगोश बोला, ''रानी जी, यह लो धन और आप अपने राज दरबार में चले जाइए, और अपने राजदरबार को संभालो।'' रानी ने कहा, ''मुझे कौन जाने देगा।'' खरगोश ने कहा, ''रानी जी, आप दरबार में चले जाइए, राजा इस धन के लालच में आ जाएगा।'' रानी ने कहा ''ठीक है' और रानी चली गई। राजा धन के लालच में आ गया। थोड़े दिन में रानी फल–फूल खाकर मोटी हो गई। एक दिन रानी राजा के ऊपर बैठ गई तो राजा की राबड़ी कड़ गई और रानी को पीटने वाला वह राजा मर गया। फिर रानी ने दूसरे राजा से शुभ विवाह कर लिया। इस नए राजा का नाम प्रेमचंद था। रानी और राजा आराम से रहने लग गये।

राजकुमार मीणा, उम्र–10 वर्ष,
समूह–दीप

3

राजा अपने कमरे में गया और कहने लगा कल उस खरगोश को पकड़ूँगा और उसे मार डालूँगा। धीरे–धीरे चाँद निकल आया और राजा को रात में सपना आया कि राजा जंगल में गया और खरगोश आ गया और कहने लगा राजा के चार कान, राजा के चार कान। राजा ने अपने कान देखे तो उसे भी अचरज हुआ कि वास्तव में उसके चार कान थे। राजा की नींद खुली तो उठकर उसने सबसे पहले अपने कानों को देखा तो दो ही कान थे। राजा उठकर सबसे पहले रानी के शयनकक्ष में गया। कहने लगा, ''रानी, मैंने खुद छूकर देखा है। मेरे दो ही कान हैं।'' रानी दो कान के राजा को देखकर बहुत ही खुश हुई।

अटल मीणा, उम्र–10 वर्ष,
समूह–सागर

4

एक दिन एक मटकी सड़क पर से लुढ़क रही थी। मटकी में छेद हो रहा था। उस छेद में होकर खरगोश के कान चमक रहे थे। रानी भी सड़क पर घूम रही थी। उसे खरगोश के कान दिखाई दिए। जैसे ही लोगों ने मटके को हाथ लगाया तो खरगोश निकलकर भाग गया। रास्ते में उस खरगोश को रानी मिली। खरगोश ने रानी को सलाम किया तो रानी बोली, ''अरे मूर्ख तुम वही हो जो राजा से कहते थे राजा तेरे तीन कान, राजा तेरे तीन कान।'

बीना मीणा,
समूह–दीप, जगनपुरा

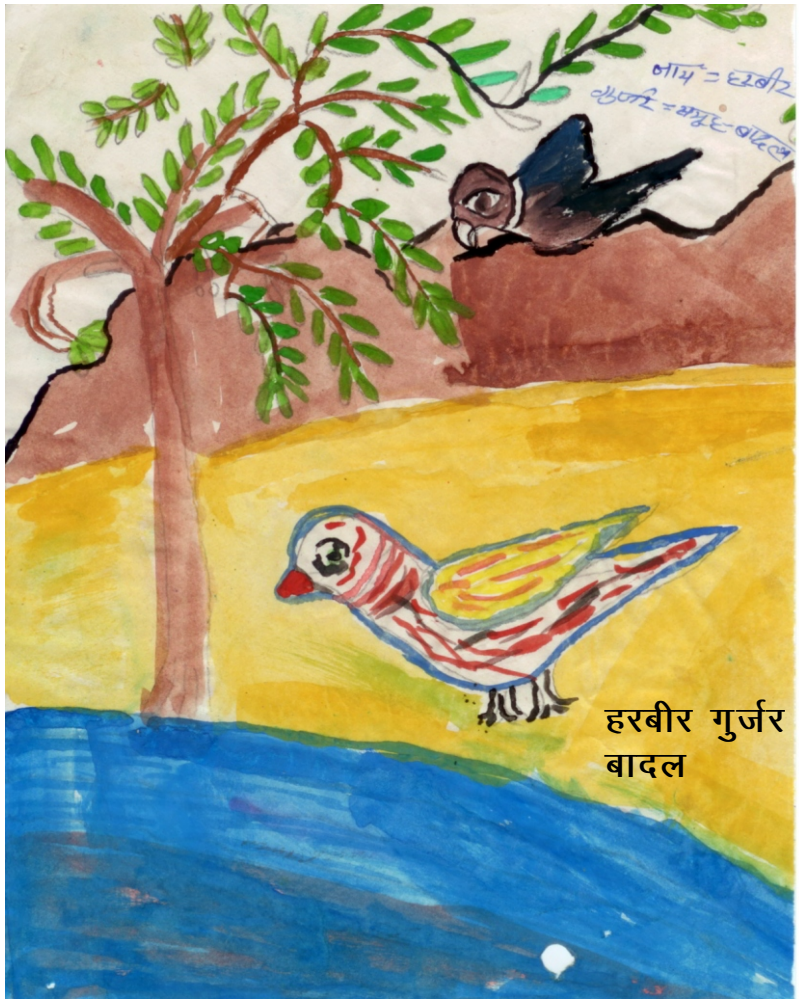

एक लापता पक्षी की याद

कई बार रास्ते में आते–जाते हुए हमें कुछ मरे हुए जानवर पड़े दिखाई देते हैं। हमारे घरों के आसपास ही कोई बछड़ा, कुत्ता या सूअर मरा पड़ा दिखाई दे जाता है। दो–दो, तीन–तीन दिन हो जाते हैं, मरे जानवर पड़े सड़ते रहते हैं। उनमें से बदबू आती रहती है। यह बदबू हमारे आसपास की हवा को गंदा करती रहती है। यह गंदी हवा साँस के जरिए हमारे शरीर में भी पहुँच जाती है।

कुछ समय पहले तक प्रकृति में इस समस्या का हल मौजूद था। लेकिन अब वह हल नहीं रहा। क्या तुम सोच सकते हो कि प्रकृति के पास मरे हुए जानवरों की सफ़ाई का क्या हल मौजूद था?इसी से जुड़ा हुआ दूसरा सवाल यह है कि वह जो हल मौजूद था वह अब क्यों नहीं रहा?

इस लेख को आगे पढ़ने से पहले तुम इन दो सवालों पर विचार करो, उसके बाद आगे पढ़ो।

हाँ, तो तुमने अपनी जानकारी का इस्तेमाल करते हुए इन सवालों के ये जवाब खोज लिए होंगे कि पहले गिद्ध नाम के पक्षी हुआ करते थे। ये पक्षी आजकल दिखाई देना बंद हो गए हैं। गिद्ध मरे हुए मवेशियों को चंद घन्टों में चट कर जाते थे। वे मरे हुए जानवरों की तलाश

में रहते थे। जैसे ही कोई मरा हुआ जानवर दिखाई देता झुण्ड के झुण्ड गिद्ध उसे खाने के लिए टूट पड़ते। इससे पहले कि मरा हुआ जानवर सड़ाँध पैदा करे गिद्ध उसे साफ़ कर देते थे।

बहुत ही सरल प्रकृति का यह पक्षी गिद्ध, चिड़िया और बुलबुल जैसे नन्हें–मुन्ने पक्षियों की तुलना में विशालकाय था। इसकी नुकीली चोंच ऐसी थी कि भैंस, गाय, बैल की मोटी चमड़ी को भी आसानी से फाड़ देती थी। ये स्वयं चीर–फाड़ नहीं कर देते थे तब तक कुत्ते, कौवे आदि पशु–पक्षी इंतजार करते थे कि कब गिद्ध महाशय चमड़ी फाड़कर मरे हुए जानवर को खाना शुरू करें ताकि फिर उनके लिए भी खाने की कुछ गुंजाइश बन सके।

गिद्ध अब नहीं दिखाई देते। इनके नहीं दिखाई देने की वजह है एक दवाई जिसने गिद्धों की पूरी प्रजाति को ही लगभग खत्म कर दिया है। इस दवाई का नाम है डिक्लोफेन। यह बाजार में मिलने वाली एक दर्द निवारक दवा है। यह दवा जानवरों को दर्द में राहत देने के लिए दी जाती है। इस दवा को खाए हुए जानवरों के शरीर में इसका असर इनके मरने तक बना रहता है। जब ये जानवर मर जाते हैं और गिद्ध इन्हें खाते हैं तो इसका विषैला असर गिद्ध के शरीर में होता है। इस दवा के असर ने गिद्धों के गुर्दे या किडनी को खराब कर दिया। किडनी की नाकामी से लीवर, आँतों आदि के आसपास यूरिक अम्ल के रवे जमा हो गए जिससे इन पक्षियों की मौत हो गयी। यह समझने की बात है कि डिक्लोफेन दवा गुर्दे के काम–काज पर प्रतिकूल असर करती है। आज दुनिया भर में गिद्धों की संख्या में विशेष कमी आई है। भारत जैसे देश में तो ये बहुत कम स्थानों पर रह गये हैं।

एक पक्षी प्रेमी वैज्ञानिक ने राष्ट्रीय केवला देव पक्षी उद्यान में 1985–86 में गिद्धों के 350 घोंसले देखे थे और उनमें 700 गिद्ध प्रजनन कर रहे थे मगर 2000–01 में कोई प्रजनन नहीं हुआ और गिद्ध भी बहुत कम मिले।

पारसी लोगों को भी इस पक्षी के विलुप्त होने से विशेष चिंता करने के लिए बाध्य कर दिया। ये अपने मृतकों को जलाने या दफ़नाने के बजाय पक्षियों के हवाले छोड़ देते हैं जिन्हें चील, गिद्ध, कौवे आदि खाते हैं। इसलिए अब वे अपने रीति–रिवाज़ को बदलने पर पुनर्विचार कर रहे हैं। ये मृतक को अग्नि में दाह करने या दफ़नाने के बारे में सोच रहे हैं। आजकल दुनिया भर में गिद्धों को बचाने का प्रयास ज़ोरों पर चल रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह पता चल चुका है कि 85 प्रतिशत गिद्ध गुर्दे की नाकामी से मरे हैं। यह भी पता चला कि गुर्दों पर किसी विष का असर हुआ है। विषैला पदार्थ डिक्लोफेनेन नामक दर्द निवारक दवा है। इस दवा का उपयोग पशुओं के इलाज में किया जाता है। मृत गिद्धों के ऊतकों का अध्ययन करने पर पता चला है कि सारे गिद्धों में डिक्लोफेन के अवशेष मौजूद थे। यह दवा भारत सहित सम्पूर्ण एशिया में पशुओं के उपचार में काम आती है। अब इस दवा के निर्माण पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया है।

विजय सिंह, शिक्षक,
उदय सामुदायिक पाठशाला, जगनुपरा

हरी काकी थारौ भलौ होजौ

एक पेटलो हियो। वा बाजार में गियो। बाजार में एक आदमी बड़ा बणा रियो हो। पेटला नै कियो कि तू काँई बणार खा रियो। वा आदमी नै कियो, ''मैं तो बड़ा खा रियो हूँ।'' पेटला नै कियो कि दिखाँ मोकू भी चखानी थोड़ोसोक बड़ो। वा आदमी नै कियो कि, ''या लै।'' बड़ा कू चाखर पेटला नै कियो कि ''या घर म बण जायगो काँई ?'' वानै कियो, ''हाओ बण जायगो।'' पेटला नै कियो, ''इस्याँ तो मैं घर जातो–जातौ याको नाँव भूल जाऊँगो। तू इस्याँ कर दो–चार बड़ा इस्याँइ दे दै। खातौ जाऊँगौ तो नाँव कोनी भूलूँगो। वा आदमी नै कियौ कि इस्याँई तो कोनी द्यूँ। पीसा लागै। तू इस्याँ कैतो जा, ''बड़ो–बड़ो–बड़ो। जब तू भूलणौ कोनी।''

तो पेटलो गैला में बड़ो–बड़ो–बड़ो बड़बड़ातो जा रियौ हो। गैला में एक दचको आ गियो। दचका का जोर सूँ पेटलो भूल गियो कि वा काँई कैतौ आ रियौ हो। वाकू इतनौ याद रियौ, 'बा बा बा।' तो अब वा 'बा बा बा' कैतौ जा रियौ हो। लोगबागनै खी कि या पेटला को तो आज दिमाग रिगस गयौ दीखै। पेटलौ पागल हो गियौ दीखै। बा बा बा बा करतौ जा रियौ।

घर प गियो तो सबसूँ पैली लुगाई गोड गियो। लुगाई सूँ कियो कि आज तो बा कर दै।
लुगाई बोली– बा काँई?
पेटलौ कियौ– बा होवै कोनी है कि गोड़–गोड़।
लुगाई बोली– अरै नासगिया गोड़–गोड़ काँई?
पेटलौ कियो– बा गोड़–गोड़ होवै नी टमाटर की नाँई।

लुगाई नै कियौ कि टमाटर की नाँईं काँई होवै। पैली आच्छ्याँ नांव पूछर आ। खोपरी मत पचावै।
पेटला नै लुगाई कू पीट नाकी। आड़ोसण–पड़ोसण भागी–भागी आई कि पेटला नै आज फेरूँ काँई उदमाद कर दियौ। पूछबा लागी कि अरी भाइ क्यूँ रो री। काँई हो गियौ।
पेटला की लुगाई नै रोतै–रौतै कियौ कि ई नासगिया नै देपाड़ी जीजी, म्हारौ बड़बोलोसोक होठ कर दियो।

'बड़बलोसोक' नांव सुणताँई पेटलौ कियौ कि हरी काकी थारो भलो होजौ। न तू आती और न या बड़बोलोसोक कैती। मैं घणी बार सूँ याद कर रियौ पण मोकू बड़ा को नाँव याद नै आ रियौ। पाछै पेटला नै वाकी लुगाई सूँ की कि मोकू बा कर दै बड़ा।
पेटला की लुगाई नै बेसण म लूण–मिर्ची मुलार झप्प दियाँ सूँ बड़ा कर दिया।
तीसूँ बड़ान कू थाड़ी म घालर, बैठा–बैठा पेटला नै एकला नै ही खा लिया।

सन्जू बैरवा, कविता बाई बैरवा,
फूल समूह, कटार–फरिया

मुझे कहानी लिखना नहीं आता है। मैं पढ़ता हूँ। चित्र देखना अच्छा लगता है। मेरे से सब बच्चे कहते हैं कि कहानी लिखना क्यों नहीं आता है?आप मोरंगे भेजना मैं उसको पढ़ लूँगा।
रोशन, 12 साल,
समूह–फूल, कटार–फरिया

प्रभात जी, हमारे स्कूल में आकर हमें कहानी लिखना सिखाया तो हमें बहुत मजा आया। हमने मोरंगे पढ़ी तो नरेश गुर्जर की कहानी और सुरेश का चित्र बहुत अच्छा लगा। मोरंगे में 'मकड़ी भी नाचने लगी', प्रियंका मीणा की कहानी बहुत अच्छी लगी। मोरेंगे में हमें अशोक जी की कहानी 'ठग और किसान' भी बहुत अच्छी लगी। मोरेंगे में कभी मेरी कहानी नहीं छपी। अबकी बार मेरी कहानी छपनी चाहिए नहीं तो फिर नहीं लिखूँगा।
मुकेश महावर, उम्र–9 वर्ष,
समूह–फूल, कटार–फरिया

मोरंगे में मुझे 'मकड़ी भी नाचने लगी' अच्छी लगी। आपने मोरंगे इतने दिनों बाद क्यों भेजी?हम इतने दिन से मोरंगे का इंतजार कर रहे थे। हमें विष्णु जी सर की कहानी अच्छी लगी।
महक, उम्र–8 वर्ष,
समूह–रंगोली

मोरंगे में 'लड़की की मदद' कहानी अच्छी लगी। विष्णु अंकल जी की कहानी 'काला चाँद' अच्छी लगी।
भावना, उम्र–12 वर्ष,
समूह–रंगोली,

मोरंगे में पृथ्वीराज अंकल की कहानी अच्छी लगी। 'मैं गर्मी में आइसक्रीम बेचूँगा' और विष्णु सर की 'काला चाँद' अच्छी लगी।
रंगोली समूह

प्यारे बच्चो, कोई कहानी कविता या कोई भी रचना जो तुम्हें अच्छी लगती है, यह अच्छी बात है। पर वह तुम्हें क्यों अच्छी लगी यह भी लिखो तो बात ज़्यादा अच्छे से समझ में आती है। कोई रचना जो तुम्हें अच्छी नहीं लगे तो उसके बारे में भी लिखो और बताओं कि फलाँ रचना हमें अच्छी नहीं लगी और इसलिए अच्छी नहीं लगी।

मोरंगे

मनराज मीणा, सागर